छः लेश्याएं

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जो कर्म परमाणुओ से आत्मा को लिप्त करता है, वह लेश्या है। जैसे, मिट्टी, गेरू आदि के द्वारा दीवार रंगी जाती है, उसी प्रकार शुभ–अशुभ भाव रूप लेप के द्वारा आत्मा का परिणाम लिप्त किया जाता है। यह भी कह सकते हैं कि मनुष्य के अच्छे–बुरे भावों को लेश्या कहते हैं। जिस प्रकार थर्मामीटर से शरीर का ताप नाप जाता है, उसी प्रकार भावों के द्वारा आत्मा का ताप अर्थात उसकी लेश्या का पता चलता है। कषायों के उदय से अनुरंजित मन–वचन–काय की प्रवृत्ति को लेश्या कहते हैं। कृष्ण, नील, कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएं हैं। इन तीनों से युक्त जीव दुर्गति में उत्पन्न होता है। तेज ,पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं हैं। इन तीनों से युक्त जीव सदगति में उत्पन्न होता है।

कृष्ण लेश्या का आदमी अपनी आँख फोड़ सकता है, अगर दूसरे की फूटती हों। अपने लाभ का कोई सवाल नहीं है, दूसरे की हानि ही जीवन का लक्ष्य है। यह निम्नतम दशा है, जहां दूसरे का दुःख ही एकमात्र सुख मालूम पड़ता है। ऐसा आदमी सुखी हो नहीं सकता। सिर्फ वहम में जीता है। क्योंकि हमें मिलता वही है जो हम दूसरों को देते है, वही लौट कर आता है।

नील लेश्या दूसरी लेश्या है। जो व्यक्ति अपने को भी हानि पहुँचाकर दूसरे को हानि पहुंचने में रस लेता है, वह कृष्ण लेश्या में डूबा है। जो व्यक्ति अपने को हानि न पहुँचाए, खुद को हानि पहुंचाने लगे तो रुक जाये, लेकिन दूसरे को हानि पहुंचाने की चेष्टा करे, वैसा व्यक्ति नील लेश्या में है। नील लेश्या कृष्ण लेश्या से बेहतर है। नील लेश्यावाला आदमी वह है जिसको स्वार्थी कहते है, जो सदा अपनी चिंता करता है। अगर उसको लाभ होता है तो आपको हानि पहुंचा सकता है। लेकिन खुद हानि होती हो तो वह आपको हानि पहुंचायेंगा।

तीसरी लेश्या कापोत है, कबूतर के कंठ के रंग की। नीला रंग और भी फीका हो गया। आकाशी रंग हो गया। ऐसा व्यक्ति खुद को थोड़ी हानि भी पहुंच जाए, तो भी दूसरे को हानि नहीं पहुँचाता। खुद को थोड़ा नुकसान भी होता हो तो सह लेगा। लेकिन इस कारण दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचाएगा। ऐसा व्यक्ति परार्थी होता है। उसके जीवन में दूसरे की चिंता और दूसरे का ध्यान आना शुरू हो जायेगा। पहली दो लेश्याओं को ठीक नहीं कह सकते हैं। कृष्ण लेश्या वाला तो सिर्फ घृणा कर सकता है। नील लेश्या वाला व्यक्ति सिर्फ स्वार्थ के संबंध बना सकता है। कापोत लेश्या वाला व्यक्ति प्रेम कर सकता है। प्रेम का पहला चरण उठा सकता है; क्योंकि प्रेम का अर्थ ही है कि दूसरा मुझसे ज्यादा मूल्यवान है। जब तक आप ही मूल्यवान हैं और दूसरा कम मूल्यवान है, तब तक प्रेम नहीं है। तब तक आप शोषण कर रहे हैं, तब तक दूसरे का उपयोग कर रहे हैं, तब तक दूसरा एक वस्तु है, व्यक्ति नहीं। तीसरी लेश्या अशुभ की, शुभ लेश्या के बिलकुल करीब है। यहीं से द्वार खुलने लगता है। परार्थ प्रेम के करुणा की छोटी सी झलक इस लेश्या में प्रवेश करने लगती है। कृष्ण, नील, कापोत लेश्याओं में कापोत लेश्या दोनों की अपेक्षा ठीक है।

तेजों लेश्या शुभ लेश्या है। शुभ की यात्रा पर यह पहला रंग हुआ। तीन रंग है शुभ के, तेज, पद्म, शुक्ल। तेज हिंदुओं ने चुना है, शुक्ल जैनों ने चुना हैं। पद्म दोनों का मध्य भाग है। बुद्ध हमेशा मध्य मार्ग के पक्षपाती थे। बुद्ध कहते थे कि जो है वह मूल्यवान नहीं है, क्योंकि उसे छोड़ना है और जो अभी हुआ नहीं वह भी बहुत मूल्यवान नहीं, क्योंकि उसे अभी होना है, दोनों के बीच में साधक हैं। तेज यात्रा का प्रथम चरण है, शुभ्र यात्रा का अंतिम चरण है। पूरी यात्रा तो पीत की है। इसलिए बुद्ध ने भिक्षुओं के लिए पीला रंग चुना है। तीनों चुनाव अपने आप में मूल्यवान हैं।

अहंकार दूसरे का विनाशक है। धर्म शुरू होता है वहां से जहां से हम अहंकार को छोड़ते हैं। संघर्ष छोड़ता हूं, दूसरे को हराना, दूसरे को मिटाना, दूसरे को दबाने का भाव छोड़ता हूं। अब मेरे प्रथम होने की दौड़ बंद होती है। अब मैं अंत में भी खड़ा हूं, तो भी प्रसन्न हूं। संन्यासी का अर्थ ही यही है कि जो अंतिम खड़े होने को राज़ी हो गया।

दूसरी शुभ लेश्या है पद्म लेश्या। जैसे ही अहंकार जल जायेगा, तो लाली पीत होने लगेगी। सुबह का सूरज जैसे–जैसे ऊपर उठने लगता है, वैसा लाल नहीं रह जायेगा, पीला हो जायेगा। स्वर्ण जैसा पीत रंग प्रगट होने लगेगा। जब स्पर्धा छूट जाती है, संघर्ष छूट जाता है, दूसरों से तुलना छूट जाती है और व्यक्ति अपने साथ राज़ी हो जाता है अपने में ही रमने लगता है, जैसे संसार हो या न हो कोई फर्क नहीं पड़ता, यह ध्यान की अवस्था है।

शुक्ल लेश्या चित्त की आखरी अवस्था है। झीने से झीना पर्दा बचा है, वह भी खो जायेगा। यह आत्मा का स्वभाव है। वहां सफेद भी नहीं बचता। उतनी उत्तेजना भी नहीं रहती। वही इन रंगों को फैलाव है। लेश्या हमारे व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है। जैसे प्रतिबिंब में हमारे बाह्य व्यक्तित्व की छवियां उतरती रहती है, वैसे ही लेश्या के तंत्र में हमारा अंतरंग व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता रहता है। इन छः लेश्याओं में प्रथम तीन अप्रशस्त लेश्या मानी जाती हैं और शेष तीन प्रशस्त लेश्याएं मानी जाती हैं।